3

पूर्व-प्राथमिक स्तर पर अभिभावकों की सहभागिता एवं उनसे संपर्क

*रीतू चंद्रा**

बचपन बड़ा ही कोमल समय होता है और यदि ऐसे में बच्चों को अभिभावकों का साथ और मार्गदर्शन मिल जाए तो विकास की प्रक्रिया को और भी बल मिलता है। यह तभी संभव है जब अभिभावक बच्चों के जीवन और उनकी शिक्षा से जुड़े विषयों में रुचि लें और यथासंभव अपना योगदान दें। उनका यही योगदान और भागीदारी ही सहभागिता कहलाती है। सहभागिता जितनी सुदृढ़ होगी उतनी अधिक प्रभावी शिक्षा एवं उज्ज्वल भविष्य होगा बच्चों का। बच्चों के जीवन में अभिभावकों की सहभागिता के अंतर्गत बच्चों का खान-पान, समाजीकरण, व्यवहार, आचरण,बातचीत और कपड़े पहनने का तरीका आदि आते हैं। यदि शिक्षा में अभिभावकों के योगदान की बात हो तो इसका अर्थ है, घर और पूर्व-प्राथमिक केंद्र दोनों ही स्तर पर होने वाली शैक्षिक गतिविधियों में अभिभावकों की सक्रिय भूमिका। जैसे – यह जानना कि बच्चा क्या और कैसे सीखता है और उसके सीखने की प्रक्रिया में अभिभावक कैसे सहयोग कर सकते हैं।

यह बात पूर्व-प्राथमिक स्तर के बच्चों की हो तो अभिभावकों की सहभागिता का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि इस समय बच्चों का बौद्धिक विकास बहुत तेज़ी से होता है। यह वह समय है जब उनके जानने और समझने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है। यह समय शारीरिक, भाषायी और सामाजिक कौशलों को सीखने और उन्हें मज़बूती प्रदान करने का भी है। यदि ऐसे में शिक्षिका के साथ-साथ अभिभावकों, खासकर माता-पिता का साथ बच्चों को मिलता है तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बल मिलता है। यदि केंद्र के कुछ घंटों को छोड़ दिया जाए तो बच्चों का शेष समय अभिभावकों के साथ व्यतीत होता है। ऐसे में बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इस प्रकार, स्कूल यदि बच्चों को सीखने के अवसर प्रदान करता है तो अभिभावक उन अवसरों को सबलता प्रदान कर सकते हैं। एक बात विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है कि छोटे बच्चे चाहे वे केंद्र में हों या घर पर, छोटी-छोटी बातों से भी सीखते हैं।

* *सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

0- + 2015.indd 18 5/26/2017 9:14:52 AM

अभिभावकों की सहभागिता महत्वपूर्ण होने के साथ ही साथ निम्न विषयों में बच्चों, अभिभावकों, शिक्षिकाओं और केंद्र के लिए लाभदायक भी हैं –

- **शैक्षिक उपलब्धि में सहायक** – एक अभिभावक यदि बच्चे के सीखने की प्रक्रिया में अपनी रुचि दिखाए तो बच्चे को लगता है कि जो कार्य वह कर रहा है वह बड़े ही महत्त्व का है, इससे उस कार्य में बच्चे की रुचि बढ़ती है। अगर वे बच्चे एवं केंद्र के संपर्क में रहते हैं तो वे जान सकते हैं कि बच्चे ने क्या सीखा, कितना सीखा और कैसे सीखा और वैसा ही तरीका वे भी अपना सकते हैं। जैसे– यदि बच्चे के केंद्र में पशु-पक्षियों के विषय में जानकारी दी जा रही हो तो, अभिभावक भी उन्हें चिड़ियाघर और घर के आस-पास घुमाने ले जा सकते हैं, पशु-पक्षियों से चित्रित किताबें दे सकते हैं, यहाँ तक कि संबंधित विषय पर कला की क्रियाएँ/गतिविधियाँ भी करवा सकते हैं। इस प्रकार अभिभावक बच्चों को केंद्र में बताए जा रहे विषय की ओर भी ज्ञानवर्धक बनाकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहायता कर सकते हैं।
- **बच्चों की उचित देखभाल में सहायक** – सहभागिता के द्वारा माता-पिता को केंद्र में चल रहे कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिलती है। वे शिक्षिका से मिलकर अपने बच्चों के व्यवहार के बारे में जान सकते हैं, साथ ही अव्यवस्थित व्यवहार को व्यवस्थित करने के तरीके भी समझ सकते हैं।
- **बच्चों के विकास में सहायक** – सतत सहभागिता द्वारा ही अभिभावक अपने बच्चे के विकास की प्रक्रिया और उनकी क्षमताओं के बारे में जान सकते हैं। यदि बच्चे में किसी प्रकार की विकासात्मक देरी (बौद्धिक, शारीरिक, भाषायी और सामाजिक-संवेगात्मक) हो रही है तो उसकी भी समय रहते पहचान की जा सकती है और समय रहते उचित समाधान दिया जा सकता है ताकि बच्चा उस विकासात्मक देरी से समय रहते उभर सके।
- **भविष्य में भागीदारी** – जो अभिभावक पूर्व-प्राथमिक स्तर पर बच्चे के विकास में योगदान देते हैं तो वे प्राथमिक स्तर पर भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर लेते हैं क्योंकि उन्हें बच्चों में अपने द्वारा किए गए योगदान में होने वाले लाभ का ज्ञान हो जाता है। ऐसे अभिभावक केंद्र में भ्रमण के लिए भी तत्पर रहते हैं और अन्य अभिभावकों के साथ भी अच्छी मित्रता कर लेते हैं।
- **सकारात्मक वातावरण के निर्माण में सहायक** – सहभागी अभिभावक ही अपने बच्चे के लिए घर पर एक तनावमुक्त, पोषक और सुरक्षित वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। ऐसे वातावरण में रहकर बच्चे स्वयं को स्वतंत्र महसूस करते हैं जिससे उनमें सृजनशीलता और समस्याओं का निवारण करने की क्षमता का विकास होता है।
- **सामाजिक अनुभव प्रदान करने में सहायक** – सहभागिता द्वारा अभिभावक बच्चों को अच्छे सामाजिक अनुभव भी प्रदान कर सकते हैं। उन्हें यह ज्ञात होता है कि उनका बच्चा किस प्रकार की गतिविधियों में रुचि लेता है। ऐसी गतिविधियों को घर पर भी किया जा सकता है। जैसे – यदि बच्चे

0- + 2015.indd 19 5/26/2017 9:14:52 AM

को गेंद से खेलना पसंद हो तो वे उसके मित्रों को घर पर बुला सकते हैं, स्वयं उनके घर जा सकते हैं या फिर पार्क में जा सकते हैं, जहाँ बच्चा अन्य बच्चों के साथ खेल सके और साथ ही मित्र भी बना सके।

- **बच्चों को प्रोत्साहन देने में सहायक** – बच्चे जब देखते हैं कि उनके अभिभावक भी उनके साथ उनकी शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग कर रहे हैं तो उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। उनका आत्मसम्मान बढ़ता है और शैक्षिक गतिविधियों में उनकी रुचि जागृत होती है।
- **केंद्र की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक** – केंद्र की गतिविधियों में शामिल होने से अभिभावकों को जानकारी हो जाती है कि उनका बच्चा स्कूल में कैसे और क्या सीखता है? यदि केंद्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ना दे सके तो वे इसके लिए अपने सुझाव भी दे सकते हैं। इनके सुझावों से केंद्र प्रशासन को जानकारी मिलती है कि कहाँ सुधार की आवश्यकता है।
- **शिक्षक और बच्चों की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक** – सहभागिता द्वारा शिक्षक और बच्चे दोनों के प्रदर्शन में गुणात्मक सुधार आ जाते हैं, जैसे – शिक्षिका पाठ को मनोरंजक बना सकती है। अभिभावक की सहायता से कक्षा को भी आसानी से इस प्रकार अनुशासित किया जा सकता है कि पढ़ना-पढ़ाना और भी रोचक हो जाता है। इसी प्रकार बच्चों को भी अनुशासित रहने की सीख मिलती है और कक्षा में रुचि होने की वजह से वे जल्दी सीखते हैं।
- **बच्चों को प्रतिदिन केंद्र आने के लिए प्रेरित करने में सहायक** – शुरूआत में बच्चे केंद्र के औपचारिक वातावरण में, अपरिचित समूह के बीच स्वयं को अकेला पाते हैं। अत: उन्हें स्वयं को इस वातावरण में ढाल पाने में कठिनाई का अनुभव होता है। ऐसे में यदि उनका अपना कोई केंद्र में आए और उनके साथ गतिविधियों में भाग ले तो इससे उनका मनोबल बढ़ता है, साथ ही केंद्र के वातावरण को आत्मसात् करने में सहायता मिलती है।

सहभागिता में बाधा

कभी-कभी अभिभावकों की सहभागिता हस्तक्षेप में भी बदल जाती है। यह तब होता है जब अभिभावक शिक्षिका के निर्णय पर बिना विचारे तुरंत प्रश्न करते हैं, अपने बच्चों के लिए विशेष ध्यान देने की माँग करते हैं, शिक्षिका का फ़ोन शिकायतों भरे संदेशों से भर देते हैं। ऐसे अभिभावकों को हर समस्या का तुरंत समाधान चाहिए होता है। अभिभावकों का ऐसा आचरण केंद्र की गतिविधियों में बाधा उत्पन्न करता है। कई केंद्रों में अभिभावकों को कोष जुटाना पड़ता है जिस कारण अनेक अभिभावक इस वजह से सहभागिता देने से बचते हैं। समय और कार्यक्रम की योजना यदि अभिभावकों की सुविधानुसार ना हो तो भी वे सहभागिता देने से वंचित रह जाते हैं। अनेक अभिभावकों को इस बात का पता नहीं होता है कि केंद्र में उनके लिए भी सहभागिता के अवसर उपलब्ध हैं और यदि पता है तो भी सहभागिता कैसे देनी हैं, उन्हें उसका ज्ञान नहीं होता।

0- + 2015.indd 20 5/26/2017 9:14:52 AM

सहभागिता बढ़ाने के तरीके

- शिक्षिका और अभिभावक के बीच लगातार संपर्क बना रहे, इसके लिए फ़ोन, ई-मेल, एस.एम.एस., संवादपत्र, पी.टी.ए. मीटिंग, ओरियंटेशन या बच्चों को छोड़ने एवं ले जाने के समय का उपयोग किया जाना चाहिए।
- अभिभावकों के लिए कार्यशाला का आयोजन करना, शैक्षिक चलचित्र दिखाना, और व्याख्यान करवाना एवं चर्चा-समूह आदि बनाने चाहिए।
- अभिभावक केंद्र के कार्यक्रमों के लिए मानव संसाधन हैं, इसलिए केंद्र द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों; जैसे – बाल-मेला,संगोष्ठी, सभा और भ्रमण आदि में अभिभावकों की सहायता ली जानी चाहिए।

सहभागिता बढ़ाने के लिए अभिभावकों से संपर्क करने के तरीके

- **होम विज़िट** – होम विज़िट के द्वारा शिक्षिका को बच्चे की पारिवारिक स्थिति, उसका रहन-सहन और बातचीत के तरीके के बारे में पता चलता है। यह उन अभिभावकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है जो बहुत ही व्यस्त हैं और किन्हीं कारणों से बच्चों के केंद्र में निरंतर रूप से नहीं आ पाते हैं। अत: शिक्षिकों को हर संभव प्रयास करना चाहिए कि वह इस दौरान अभिभावकों के साथ अच्छा संबंध स्थापित कर सकें। होम विज़िट के दौरान अभिभावकों और शिक्षिकाओं के बीच बच्चे से संबंधित बातें जैसे– उसकी अच्छी-बुरी आदतें या उसके विकास से संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है। अभिभावक को भी शिक्षिका के बारे में और उसके शिक्षण के तरीके के बारे में जानकारी मिलती है। इससे बच्चे में भी आत्मविश्वास आता है और अभिभावकों को भी लगता है कि केंद्र उनके बच्चे के प्रति बड़ा ही सजग है।
- **अभिमुखीकरण/ओरियंटेशन** — यह उन अभिभावकों के लिए होता है जो पहली बार केंद्र में आए हैं। यहाँ वे गतिविधियों का अवलोकन करते हैं और शिक्षिका के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हैं। इसी समय उन्हें अभिभावकों के लिए बनाई गई पुस्तिक दी जाती है, जिसके द्वारा उन्हें केंद्र के कार्यक्रमों और गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती है तथा साथ ही उन्हें विभिन्न प्रकार के आवेदन प्रपत्र के बारे में भी बताया जाता है।
- **पी.टी.ए. मीटिंग** – इस प्रकार की बैठक शिक्षिका और अभिभावकों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान और बच्चों की शिक्षा और उनके विकास से संबंधित बातों का समाधान करती है। पी.टी.ए. मीटिंग के दौरान अभिभावक के मन में बहुत सारे प्रश्न आते हैं। ऐसे में बच्चों द्वारा की गई गतिविधियों की प्रदर्शनी, पोर्टफ़ोलियो, एल्बम आदि स्वत: ही अधिकांश प्रश्नों के उत्तर दे देते हैं। अभिभावक केंद्र और अन्य बच्चों के साथ अपने बच्चे के समायोजन और सामंजस्य के विषय में भी प्रश्न करते हैं। इस समय बच्चे के बारे में सकारात्मक बातें कही जानी चाहिए और किसी घटना की चर्चा की जानी चाहिए। अभिभावक अपने व्यस्त समय में से वक्त निकालकर आते हैं, इसलिए समय का भी ध्यान रखा जाना चाहिए।

0- + 2015.indd 21 5/26/2017 9:14:52 AM

प्रदर्शनी (बच्चों के कार्य से संबंधित), कुछ पुरस्कार और प्रमाण-पत्र पी.टी.ए. मीटिंग को एक यादगार कार्यक्रम बना देते हैं।

- **वैयक्तिक मुलाकात** – ऐसी मुलाकात बच्चे के विषय में चर्चा के लिए बुलाई जाती है। इस समय अभिभावक गतिविधि करते समय बच्चे का अवलोकन भी कर सकते हैं।
- **आकस्मिक बैठक** — ये अनियोजित होती हैं, जैसे — अभिभावकों व शिक्षिका का अचानक बस स्टैंड या दुकान पर मिलना आदि। ऐसे में अभिभावक और शिक्षिका दोनों ही बच्चे के विषय में थोड़ी बहुत चर्चा कर सकते हैं। अधिक चर्चा के लिए अभिभावकों को केंद्र में आने का आमंत्रण दिया जाना चाहिए।
- **रोज़मर्रा की मुलाकात** — जब अभिभावक बच्चे को छोड़ने और लेने आएँ तब भी कुछ सामान्य विषयों पर चर्चा की जा सकती है।
- **समाचार पत्रिका** — बच्चे के केंद्र में होने वाले अथवा हो चुके कार्यक्रमों के बारे में अभिभावकों को सूचित करने के लिए मासिक या द्विमासिक समाचार पत्रिका भी केंद्र द्वारा प्रकाशित की जा सकती है।
- **चिट्ठी/परिपत्र** — इसके द्वारा डॉक्टर का जाँच के लिए आना, विशेषज्ञ से बातचीत, शैक्षिक फ़िल्म, कठपुतली का कार्यक्रम या केंद्र में किए जा रहे छोटे-मोटे बदलाव के विषय में जानकारी दी जानी चाहिए।
- **विवरणिका/पुस्तिका** — अभिभावकों के लिए यह एक संदर्भ की तरह है, जिसमें केंद्र की नीतियों, गतिविधियों व कार्यक्रमों, फ़ीस, स्टाफ, यूनिफ़ॉर्म, यातायात के साधन एवं चिकित्सीय सुविधाओं के विषय में जानकारी होती है।
- **विज्ञापन** — इसका प्रयोग किसी जानकारी या केंद्र के कार्यक्रम को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए किया जाता है।
- **बुलेटिन/सूचना पटल** — इस पर विभिन्न प्रकार की सूचना, बैठक, बच्चों के नाम, पता, उम्र, कक्षा, शिक्षिका का नाम,कमरा संख्या, कार्यक्रम में बदलाव, भ्रमण की घोषणा, पिकनिक, छुट्टी आदि की जानकारी होती है। बच्चों के पालन-पोषण और अनुशासन से संबंधित विषयों की जानकारी भी लगाई जा सकती है।
- **प्रदर्शनी** — बच्चों की कला से संबंधित गतिविधियों की प्रदर्शनी, उनके द्वारा एकत्रित की गई वस्तुओं; जैसे– पत्ते, बीज, कंकड़ आदि द्वारा अभिभावकों को जानकारी मिलती है कि वे वैसी वस्तुएँ बच्चों को घर में भी उपलब्ध कराएँ, ताकि उनमें कलात्मकता का विकास हो सके।
- **अभिभावक पुस्तकालय** — बड़े केंद्रों में अभिभावकों के लिए एक छोटा-सा स्थान निर्धारित होता है, जहाँ उनकी जानकारी बढ़ाने वाली पुस्तकें व पत्रिकाएँ रखी होती हैं जैसे– बच्चों का पालन-पोषण, भाषा विकास व विकासात्मक समस्याएँ आदि।
- **अभिभावकों का कोना** — शिक्षिका की अनुपस्थिति में अभिभावकों को जानकारी देने का यह बड़ा ही सशक्त माध्यम है। अधिकांश अभिभावक बच्चे को छोड़ने के बाद या लेने आने

0- + 2015.indd 22 5/26/2017 9:14:52 AM

से पूर्व कुछ समय यहाँ व्यतीत कर सकते हैं। यह कोना एक कमरे या गैलरी में भी हो सकता है, जहाँ कुछ कुर्सियाँ और ज्ञानवर्धक पुस्तकें, कट-आउट, फ़ोल्डर, पुस्तिकाएँ, पत्रिका, लेख, प्रपत्र, अखबार रखे जा सकते हैं। इसके साथ ही कुछ संदेश बच्चों के विकास पर चार्ट के द्वारा दीवारों पर लगाए जा सकते हैं।

- **डायरी** — हर बच्चे की अपनी एक डायरी होती है जिसमें शिक्षिका हर विषय की जानकारी अभिभावकों को देती है; जैसे— आने वाली बैठक, केंद्र में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम, बच्चे की सेहत और विकास आदि।
- **छोटे संदेश** — इन्हें किसी छोटे से कागज़, डायरी पर, ई-मेल या एस.एम.एस. के द्वारा दिया जा सकता है।
- **फ़ोन पर बातचीत** — यह भी अभिभावकों से सीधा संपर्क स्थापित करने का बड़ा ही सशक्त माध्यम है।
- **बाल मेला** — यह एक मनोरंजनपूर्ण और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम है। इसमें केंद्र में की जा रही गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं; जैसे — नाचना-गाना, चित्र बनाना और खेल। अभिभावक भी स्वतंत्र अभिव्यक्ति सत्र या खुली चर्चा सत्र के दौरान अपने बच्चे और केंद्र की गतिविधियों के विषय में केंद्र के स्टाफ से चर्चा कर सकते हैं।

देखा गया है कि बच्चों की शिक्षा, उनका विकास और अभिभावकों की स्कूल की गतिविधियों और कार्यक्रमों में सहभागिता आदि की पूर्ण ज़िम्मेदारी शिक्षिका पर ही डाल दी जाती है। लेकिन विचारणीय बात तो यह है कि जितनी ज़िम्मेदारी शिक्षिका की होती है उतनी ही अभिभावकों की भी है। इसलिए अभिभावक केंद्र की गतिविधियों और कार्यक्रमों में सहभागिता को एक औपचारिकता ना समझें, अपितु अपनी ज़िम्मेदारी समझें। इसके लिए आवश्यक है कि सर्वप्रथम बच्चों के विकास की समझ बनाएँ, एक अच्छे अभिभावक के रूप में बच्चों के उचित पालन-पोषण के लिए घर में एक सुरक्षित सीखने का वातावरण बनाएँ, बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करें, बच्चों को अनुशासन में रखें और उनकी सही दिनचर्या और खान-पान को निर्धारित करें। अभिभावक केंद्र में सीखी गई क्रियाओं को बच्चों के साथ घर पर दोहराएँ, उन्हें नए अनुभव दें,केंद्र की गतिविधियों और अभिभावक संघ की सदस्यता लें, साथ ही बच्चों की शिक्षा, पी.टी.ए. मीटिंग और केंद्र के कार्यक्रमों में स्वेच्छा से सम्मिलित हों। शिक्षिका के लिए भी आवश्यक है कि वह अभिभावकों से निरंतर संपर्क बनाए रखे और समय-समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान तथा बातचीत करती रहे।

0- + 2015.indd 23 5/26/2017 9:14:52 AM